संस्कृत साहित्य सौरभ

नलोदय

संस्कृत-साहित्य-सौरभ

७

कालिदास-कृत

नलोदय

●

श्री हरदयालुसिंह
द्वारा
कथासार

●

विष्णु प्रभाकर
द्वारा
संपादित

●

१९५५

सत्साहित्य - प्रकाशन

प्रकाशक
मार्तण्ड उपाध्याय,
मंत्री, सस्ता साहित्य मण्डल,
नई दिल्ली

दूसरी बार : १९५५
मूल्य
छः आना

मुद्रक
नेशनल प्रिंटिंग वर्क्स,
दिल्ली

संस्कृत-साहित्य-सौरभ

हमारा संस्कृत-साहित्य अत्यंत समृद्ध है। भारतीय जीवन का शायद ही कोई ऐसा अंग हो जिसके संबंध में मूल्यवान सामग्री का अनंत भंडार संस्कृत-साहित्य में उपलब्ध न हो। लेकिन खेद की बात है कि संस्कृत से अपरिचित होने के कारण हिन्दी के अधिकांश पाठक उससे अनभिज्ञ हैं। उनमें जिज्ञासा है कि वे उस साहित्य से परिचय प्राप्त करें; परन्तु उसका रस वे हिन्दी के द्वारा लेना चाहते हैं।

पाठकों की इसी जिज्ञासा को देखकर के महाकवियों, नाटककारों आदि की प्रमुख रचनाओं को छोटी-छोटी कथाओं के रूप में हम हिन्दी में प्रस्तुत कर रहे हैं।

पुस्तकों की भाषा बहुत सरल बनाने का प्रयत्न किया गया है। पाठकों की सुविधा के लिए टाइप भी मोटा लगाया गया है।

इन पुस्तकों का सम्पादन हिन्दी के सुलेखक श्री विष्णु प्रभाकर ने बड़े परिश्रम से किया है।

इस माला में कई पुस्तकें निकल चुकी हैं और आगे निकल रही हैं। आशा है हिन्दी के पाठकों को इन पुस्तकों से संस्कृत-साहित्य की महान् रचनाओं की कुछ-न-कुछ झांकी अवश्य मिल जायगी। पूरा रसास्वादन तो मूल ग्रंथ पढ़कर ही हो सकेगा। यदि इन पुस्तकों के अध्ययन से मूल पुस्तकें पढ़ने की प्रेरणा हुई तो हम अपने परिश्रम को सफल समझेंगे।

दूसरा संस्करण

इस माला की पुस्तकें बहुत ही लोकप्रिय हो रही हैं और हमें हर्ष है कि कुछ पुस्तकों का चंद महीनों में दूसरा संस्करण प्रकाशित हो रहा है। आशा है कि भारतीय संस्कृति और साहित्य के प्रेमी पाठक इन पुस्तकों को और भी चाव से अपनायेंगे।

—मंत्री

भूमिका

राजा नल की कहानी भारतीय इतिहास की एक अमर कहानी है। नल-दमयन्ती के अपूर्व प्रेम को पति-पत्नी के आदर्श प्रेम के रूप में माना गया है। महाभारत में इस कथा का विस्तार से उल्लेख मिलता है। उसके बाद अनेक कवियों ने इसी कथा के आधार पर काव्य ग्रंथों की रचना की है। उनमें श्री हर्ष-रचित 'नैषध' बहुत प्रसिद्ध है, पर उसमें कवि की कल्पना का चमत्कार इतना है कि मूल कथा पीछे रह जाती है। फिर वह सम्पूर्ण भी नहीं है। इस दृष्टि से महाभारत का 'नलोपाख्यान' आदर्श है। इसके अतिरिक्त कवि कालिदास-रचित 'नलोदय' में भी नल की कथा का वर्णन है। 'नलोदय' के रचयिता कालिदास कौन थे और कब हुए थे, इस बारे में तीव्र मतभेद है। विद्वान् लोग मानते हैं कि 'शकुन्तला' और 'रघुवंश' के लेखक कवि-कुल-गुरु कालिदास ने 'नलोदय' नहीं लिखा। उसके रचयिता कोई और कालिदास रहे होंगे। लेकिन जहां तक नल की कथा का सम्बन्ध है उसकी प्राचीनता में, महाभारत के कारण, सन्देह नहीं है। उसकी लोकप्रियता विवाद से परे है।

इस कथासार में किसी एक पुस्तक को ही आधार नहीं माना गया है। 'नलोदय' और 'नलोपाख्यान' दोनों को लेकर इसे लिखा गया है। लेकिन चूंकि इसका आरम्भ 'नलोदय' से किया गया है, इसलिए नाम वही रहने दिया है।

—सम्पादक

नलोदय

: १ :

बहुत समय पहले की बात है। भरतखंड में निषध नाम का एक बड़ा समृद्ध देश था। वहां वीरसेन नाम के राजा राज्य करते थे। उनके कामदेव के समान एक सुन्दर कुमार उत्पन्न हुआ। उसका नाम नल था। वह अपने पिता के समान ही प्रतापी, सत्यवादी और संयमी था। थोड़े ही समय में उसने सारी विद्याएं सीख लीं। फिर अपने पिता से राज्य पाकर, मंत्रियों की सलाह व सहायता से उसका भलीभांति प्रबंध करने लगा। थोड़े ही दिनों में उसने प्रजा का मन जीत लिया।

इधर विदर्भ देश में भीम नाम के राजा राज्य करते थे। वह बड़े बलशाली थे। उन्होंने दमन नाम के महर्षि की बड़ी सेवा की थी। उनके आशीर्वाद से उनके दम, दान्त और दमन नाम के तीन पुत्र तथा दमयन्ती नाम की एक सुन्दरी कन्या उत्पन्न हुई। बड़ी होने पर दमयन्ती अपनी आयु की युवतियों में सबसे अधिक सुन्दर मानी जाती थी। उसकी सुन्दरता का वर्णन करना कवियों की शक्ति के भी बाहर था

उस समय यदि नल संसार में सर्वश्रेष्ठ मनुष्य था तो दमयन्ती सर्वश्रेष्ठ सुन्दरी थी।

एक बार की बात है कि नल घूमते-घूमते उपवन में एक सरोवर के किनारे पहुंचे। सुहावनी ऋतु थी। प्रकृति की छटा देखते ही बनती थी। नल मुग्ध होकर उसे निरखने लगे। इतने में राजहंसों की एक टोली वहां आकर उतरी। कुछ देर तक नल उनकी मनोहारी क्रीड़ा देखते रहे। फिर एकाएक उन्हें यह विचार सूझा कि हंसों की टोली में से एक हंस को पकड़ कर दिल बहलाया जाय। यों राजा नल बड़े साधु स्वभाव के थे, किसी को पीड़ा पहुंचाना उनकी आदत नहीं थी। पर उस समय उनकी ऐसी ही बुद्धि होगई। उन्हें आता देखकर और सब हंस तो उड़ गये, पर एक किशोर हंस उनकी पकड़ में आगया। पहले तो उसने छूटने की बड़ी कोशिश की, पर जब उसका कोई बस न चला तब नल को संबोधित करके वह मनुष्यवाणी में बोला :

"हे राजन्, हमने तो सुना था कि राजा नल बड़े समझदार और दयालु हैं। उनके राज्य में कोई अन्याय नहीं होता; पर आपके व्यवहार को देखकर वह धारणा गलत निकली। हम निरीह प्राणियों को पकड़ कर आपको क्या आनन्द होता होगा? ऐसा खेल खेलते हुए आपको शर्म आनी चाहिए। इससे आपकी कीर्ति

बढ़ने वाली नहीं है। आपको अपनी शूरता ही दिखानी है तो शिकारी पशुओं और बलशाली राजाओं की कोई कमी नहीं है। ज़रा देर सुस्ताने को और इस उपवन की शोभा निरखने को हमारी टोली यहां उतरी थी। दो घड़ी विश्राम करके हम अपने निवास की ओर चले जाते। आप ज़रा मेरी बूढ़ी माता, बाल पत्नी और उसके बाल हंस का भी तो विचार कीजिए। मां मेरी राह देख रही होगी और मेरी पत्नी और बालक का क्या हाल होगा ? उन बेचारों को क्या पता कि मैं यहां एक निर्मम राजा के मनोविनोद का साधन बनकर अपने प्राण गंवाने जा रहा हूं।"

इतना कहकर वह किशोर हंस विलाप करने लगा और थोड़ी देर बाद मूर्छित होगया। होश आने पर वह फिर कहने लगा :

"हे विधाता, तुम बड़े क्रूर हो। यद्यपि कमल-नाल से आपका जन्म हुआ है, आपके हाथ भी कमल के समान कोमल हैं और उन्हीं हाथों से आपने मेरी स्त्री को उत्पन्न किया है, पर यह तो बताओ कि आपके इन्हीं हाथों से हमारे वियोग की निष्ठुर भाग्यलिपि कैसे लिखी गई ? मेरे छोटे बालक ने तो अभी आंखें भी नहीं खोली हैं। वे भोजन की आशा में मेरी राह देखते होंगे। मालूम होता है, अब हम सबका ही अन्त आगया है।

बूढ़ी मां अपने बेटे के, युवती पत्नी अपने पति के और छोटा बालक अपने पिता के वियोग में मर जायगा और यहां मैं उन सबको याद करता हुआ संसार से विदा होता हूं।" इतना कहकर वह हंस फिर मूर्छित हो गया।

यह देखकर राजा नल को बड़ी वेदना हुई। वह बार-बार पछताने लगा कि क्यों वह अपने ज़रा से स्वार्थ के लिए इतने जीवों के दुःख का कारण बन रहा है। इसलिए कुछ देर सोचने के बाद उसने हंस को छोड़ दिया। हंस तो यह समझ रहा था कि अब उसका अन्त आगया है, पर जब उसने अपने को मुक्त देखा तो वह बहुत खुश हुआ और बड़ी कृतज्ञता से बोला :

"राजन्, मैंने तो सोच लिया था कि अब इस जीवन में अपने कुटुंबियों से भेंट न होगी, पर आपकी इस कृपा के कारण हम सबको नया जन्म मिला है। हम सब आपके बहुत ही आभारी हैं। इस कृपा के लिए हम आपका ऐसा कोई काम करेंगे कि जिससे आप जन्म भर हमें याद रखेंगे।"

इतना कहकर हंस उड़ गया और राजा नल भी अपने नगर को लौट आये।

: २ :

दमयन्ती अपने महल के झरोखे में बैठी हुई

पुष्पवाटिका की सुन्दरता देख रही थी। पक्षी चह-चहा रहे थे और भौंरे कमल के फूलों पर मंडराते हुए गूंज रहे थे। इतने में हंसों की एक टोली उस बगीचे में उतरी। थोड़ी देर विश्राम करने के बाद और हंस तो उड़ गये, पर एक किशोर हंस वहां रह गया। वह उड़ना चाहता था, पर उड़ नहीं सकता था। दमयंती का ध्यान उस ओर गया। वह नीचे उतरकर बगीचे में आई और हंस को पकड़ने लगी। हंस उड़ने के बजाय अपने आप दमयंती के हाथों में आ गया और उसने अपनी कोमल गर्दन दमयंती की गोदी में डाल दी। ऐसा मालूम होता था कि वह थक गया है और भूखा है। दमयंती ने दासी से दूध मंगवाया और अपने हाथों से उसे पिलाया। दूध पीने के बाद हंस की शक्ति लौट आई और वह मनुष्य की बोली में बोला :

"हे राजकुमारी, आज तुमने मुझे जो जीवन-दान दिया है उसका मैं किस प्रकार बदला चुकाऊं? मैं साधारण हंस नहीं हूं। जगत्-पिता ब्रह्मदेव की सवारी बनने का सौभाग्य मुझे कई बार मिला है। एक रोज ब्रह्मदेव और उनकी पत्नी सरस्वती मेरे पंखों पर चढ़-कर आकाश में घूम रहे थे। घूमते-घूमते वे इसी देश पर से उड़े। नीचे देखकर सरस्वती ने ब्रह्मा से कहा, 'आपने सारी सृष्टि रची, लेकिन मेरे विचार से स्त्रियों

में आपकी सर्वोत्तम रचना दमयंती है। वह नारियों में रत्न है, पर आपकी रचना में एक कमी रह गई है। दमयंती की जोड़ का कोई पुरुष आपने पैदा नहीं किया।' यह सुनकर ब्रह्मा बोले, 'देवी, मैं बूढ़ा हो गया हूं, तो तुमने क्या यह समझ लिया कि मैं भूलें ही करता हूं ? लेकिन इस बारे में तुम्हारी जानकारी कम है। दमयंती की जोड़ का एक नर-रत्न मैं निर्माण कर चुका हूं। निषद देश के राजा वीरसेन का वह पुत्र है और नल उसका नाम है।' यह सुनकर सरस्वती चुप होगई।

"हे राजकुमारी, ब्रह्मा और सरस्वती का यह संवाद आप तक पहुंचाना मेरा काम था। राजा नल का भी आतिथ्य मैं प्राप्त कर चुका हूं। उन जैसा सुन्दर पुरुष मैंने नहीं देखा। उनकी सुन्दरता स्वयं कामदेव को भी मात करती है। सूर्य के समान वे प्रतापी हैं। वीर और बलवान् ऐसे हैं कि समस्त प्रदेश पर उनकी विजय-वैजयंती फहरा रही है। उनके गुणों ने सारी प्रजा का मन मुग्ध कर लिया है। मानवों में उनके जैसा पुरुष मुझे दिखाई नहीं देता। वह सब तरह तुम्हारे योग्य हैं। तुम्हारी इच्छा हो तो मैं राजा नल के मन तक तुम्हारी बात पहुंचाऊं ?"

दमयंती यह सुनकर बोली, "अगर विधाता ने यही सोच रखा है तो मैं उसे कैसे मिटा सकती हूं।

मुझे उसकी इच्छा के आगे सिर झुकाना ही चाहिए।" यह सुनकर हंस अपने लोक को उड़ गया।

: ३ :

दमयंती ने जब से हंस के द्वारा राजा नल के रूप, गुण और वीरता की बातें सुनीं तबसे उसका मन उन्हीं का विचार करने लगा। उपवन में घंटों बैठी रहती और उन्हींके विचारों में डूबी रहती। सखियां इधर-उधर की बातें करतीं तो उसपर कोई ध्यान नहीं देती। खेल-कूद में भी कोई भाग नहीं लेती।

सखियों ने जब दमयंती का यह हाल देखा तो उसकी माता को सूचना दी। मां ने सारा हाल समझकर महाराज भीम से कहा कि अब दमयंती के विवाह की फिक्र करनी चाहिए। अच्छा हो कि आप जल्दी ही स्वयंवर का प्रबन्ध करके दमयंती के लिए योग्य वर की तलाश करें।

यथाकाल विदर्भ-नरेश ने दमयंती के स्वयंवर का आयोजन किया। उसमें भाग लेने के लिए देश-विदेश के राजा आने लगे। देवर्षि नारद के मुख से जब दिक्पालों ने दमयंती के रूप-गुण की प्रशंसा सुनी तो वे भी उसको पाने के लिए उत्कंठित हो उठे। वे भी विदर्भ देश को चल पड़े। रास्ते में राजा नल से उनकी भेंट हुई। नल नरेश के लोकोत्तर रूप, गुण और बल

को देखकर उनको अपनी सफलता की कोई आशा नहीं रही। तब आपस में सलाह करके वे नल से बोले, "महाराज, आप बड़े सत्यवादी, दयालु एवं धर्मात्मा हैं। हमारा एक काम अटका हुआ है। उसे आप ही पूरा कर सकते हैं। अगर उसे पूरा करने का आप वचन दें तो सेवा में निवेदन करें।" नल ने विश्वास दिलाया कि उनका काम अवश्य संपन्न होगा।

यह सुन सुरेश्वर दिक्पाल बोला, "आप हमारे दूत बनकर दमयंती के पास जाने की कृपा करें और उसको हममें से किसी एक का वरण करने का अनुरोध करें।" यह सुनकर नल बड़े असमंजस में पड़े। वे बोले, "मैं तो स्वयं दमयंती के स्वयंवर में भाग लेने को जा रहा हूं और स्वयं उसका वरण करना चाहता हूं। तब भला मैं आपका संदेशवाहक कैसे बन सकता हूं ?" इसपर दिक्पाल बोले, "आप प्रतिज्ञाबद्ध हो चुके हैं। आपको तो अब जाना ही पड़ेगा।" अब तो वे विवश होगये और दिक्पालों के दूत बन कर दमयंती के महल की ओर चल पड़े।

राजद्वार पर सैकड़ों पहरेदार थे। पर राजा नल तिरस्कारिणी विद्या जानते थे। इसलिए उनको कोई नहीं देख सका और वे सीधे दमयंती के अन्तःपुर में चले गये। इस प्रकार एक अजनबी आदमी को एका-

एक अन्दर आया देखकर दमयंती की सब सखियां हड़बड़ाकर उठ खड़ी हुईं और दमयंती भी असमंजस में पड़ गई। राजा नल का रूप देखकर वह उनकी ओर आकर्षित भी हुई। इसलिए ज़रा संभल कर और लजाती हुई उनसे बोली, "आप कौन हैं? अपना परिचय तो दीजिए। इस प्रकार बिना सूचना दिये अन्तःपुर में कैसे पहुंचे? आपको द्वार पर किसी ने रोका नहीं? आपका रूप, लावण्य तथा हाव-भाव देख कर और अपने मन की भावनाएं अनुभव करके ऐसा लगता है कि कहीं आप राजा नल तो नहीं हैं? मेरा मन कुछ विचलित हो रहा है। अगर वही हैं तो ठीक, नहीं तो अपने आगमन का कारण कहिये।"

यह सुनकर नल बोले, "हे भाग्यशालिनी, डरो मत। तुम्हारा अनुमान ठीक है। मैं नल ही हूं। पर इस समय मैं अपने काम से नहीं आया हूं, बल्कि दिक्पालों का दूत बनकर आया हूं। इस समय मेरा काम उनका संदेश आपको सुनाना है।"

दमयंती ने नल का राजोचित स्वागत-सत्कार किया और फिर बोली, "राजन्, वैसे तो आप मेरे हृदय-मंदिर में पहले से ही विराजमान् हैं, पर इस समय आप दूत बनकर आये हैं। और फिर साधारण दूत नहीं, देवदूत। अपना संदेश कहिये।"

नल बोले, "दिक्पालों ने आपसे निवेदन किया है कि इस स्वयंवर में आप उनमें से ही किसी एक को अपना पति वरण करें। इससे आपको अपार सुख प्राप्त होगा। मनुष्य तो आखिर मनुष्य है। वह देवताओं से किसी बात में आगे नहीं बढ़ सकता। और फिर किसी मनुष्य की प्रार्थना अस्वीकृत हुई तो वह तुम्हारा कुछ बिगाड़ नहीं सकेगा। लेकिन अगर देवता लोग रुष्ट होगये और हर काम में रुकावट डालने लगे तो कोई काम पूरा न हो सकेगा। मान लो कि तुमने किसी मनुष्य को वरण किया और अग्निदेव रुष्ट होगये तो भांवरों के समय अग्नि प्रकट न होगी। उस समय तुम्हारे विवाह का साक्षी कौन होगा ? यदि यमराज रुष्ट होगये और वर-वधू में से किसी एक को उन्होंने अपने यहां बुला लिया तो वह विवाह कैसे सम्पन्न होगा ? इस प्रकार अनेक विघ्न आ सकते हैं। इस कारण मेरी सलाह है कि तुम दिक्पालों में से किसी एक को वरण कर लो। इसीमें सब का भला है।"

देवपक्ष के समर्थन में नल ने जो कुछ कहा उसे ध्यानपूर्वक दमयंती ने सुना। उसके बाद नम्रतापूर्वक वह बोली, "राजन्, आपने अपना कर्तव्य पूरा किया। अब मेरा निवेदन भी सुन लें। मैंने पहले से ही अपना तन, मन और धन सबकुछ राजा नल को अर्पण कर

दिया है । आप और देवता तो क्या, स्वयं विष्णु भगवान् भी सिफारिश करें तो भी मैं दिक्पालों की पत्नी बनने को तैयार नहीं हूं । मेरा निश्चय अडिग है ।"

यह सुन नल बड़े असमंजस में पड़े । वे बोले, "राजकुमारी, तुमने तो मुझे बड़ी विचित्र स्थिति में डाल दिया है । तुम्हारा यह निर्णय लेकर जब मैं दिक्पालों के पास जाऊंगा तो वे कहेंगे कि इसने हमारा दूत बन कर भी अपना काम बनाया है । अपना स्वार्थ छोड़कर उनका काम स्वीकार किया, इसका श्रेय तो मिलेगा नहीं, उल्टे अपयश का भागी होना पड़ेगा ।" यह सुन दमयंती बोली, "आप परेशान न हों । इसमें उनके रुष्ट होने की कौनसी बात है ? आप उनसे सब सत्य-सत्य कह दीजिए और मैं स्वयंवर में उनके सामने आपको वरण करूंगी । आपको कोई दोष नहीं देगा ।" इस प्रकार कह-कर दमयंती ने नल को आदरपूर्वक विदा किया ।

राजा नल ने लौटकर दिक्पालों को सारा हाल सुनाया । सुनकर उन्हें बड़ी निराशा हुई, पर उन्होंने अपने प्रयत्न नहीं छोड़े ।

स्वयंवर आरम्भ हुआ । उसमें मनुष्यों के अलावा, देवता, गंधर्व, किन्नर आदि सब जातियों ने भाग लिया । दमयंती के रूप-गुण की जो ख्याति संसार में होगई थी उससे उसे पाने को सब लालायित हो रहे थे ।

सब राजा लोग स्वयंवर के मंडप में अपने-अपने स्थान पर विराजमान थे। ठीक समय पर शोभामूर्ति दमयंती ने हाथ में वरमाला लिये वहां प्रवेश किया। तब हज़ारों आंखें एकसाथ दमयंती का रूप निहारने लगीं। उस देवोपम लावण्य को देखकर वे सब हतप्रभ होगये। स्वयं देवी सरस्वती दमयंती से वहां उपस्थित राजाओं का परिचय कराने आई थीं। सबसे पहले वे दमयंती को नागराज वासुकी के सामने ले गईं और उनका परिचय देने लगीं, "हे राजनंदिनी, ये हैं नागराज वासुकी। इन्होंने पिनाकपाणि भगवान् शंकर की सेवा में ही अपने जीवन को धन्य माना है। और भगवान् शंकर इनका बड़ा सम्मान करते हैं। कभी वे अपने धनुष की प्रत्यंचा के रूप में इनका उपयोग कर लेते हैं और कभी अपने शिथिल जटाजूटों को इनसे बांध लेते हैं। कभी इनके कंकण बनाकर अपने हाथों में धारण कर लेते हैं। ये आज तुम्हारे प्रार्थी बनकर यहां उपस्थित हुए हैं। इनकी अभिलाषा पूर्ण करना तुम्हारे हाथ में है। इनसे किसी प्रकार भयभीत मत होना। यद्यपि इनकी डाढ़ों में विष रहता है, पर ये शंकर के जटाजूट पर विराजित चन्द्रमा के अमृत का भी रसास्वादन करते रहते हैं। इस कारण इनके विष का कोई प्रभाव नहीं होता।"

सरस्वती देवी ने नागराज की जो वकालत की उसका दमयंती पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा। यह देख वह इन्द्र, अग्नि, वरुण आदि देवों का परिचय कराती हुई आगे बढ़ीं।

तभी सहसा दमयंती की निगाह एक-नहीं पांच-पांच नलों पर पड़ी। वह आश्चर्य से चकित रह गई। उसने सोचा कि हो न हो यह दिक्पालों के प्रस्ताव को न मानने का परिणाम हैं। उन्हींकी यह माया है कि जिससे धोखे में आकर वह इस प्रकार किसी एक दिक्पाल का वरण करले। वह विचार में पड़ गई कि कैसे वह असली राजा नल को पहचाने! उसे और कोई मार्ग नहीं सूझा। वह उन्हीं देवों की स्तुति करने लगी। उसने मन-ही-मन प्रार्थना की कि हे दिक्पालगण, आपका संदेश मिलने से पहले ही मैंने राजा नल को अपना पति वरण कर लिया था। अगर मैं आपके संदेश के अनुसार आपमें से किसी को वरण करती हूँ तो वह अधर्म होता है। मैं अपने धर्म का पालन करना चाहती हूँ। मेरी प्रार्थना है कि आप अपनी माया हटाकर मेरी सहायता करने की कृपा करें, तांकि मैं महाराजा नल को अपने पति के रूप में वरण कर सकूं।

दिक्पालों ने प्रसन्न होकर अपनी माया संवरण करली और तब वहाँ दमयंती को एक ही राजा नल

बैठे हुए दिखाई दिए। अब तो उसने पास जाकर उनके गले में वरमाला डाल दी। नल और दमयंती का धूमधाम से विवाह हो गया। नल को देवताओं ने वरदान दिया कि उनका स्मरण करते ही वे नल की सहायता को प्रकट हो जाया करेंगे। इस प्रकार आशीर्वाद देकर देवता और दिक्पाल अपने-अपने लोक को चले गये। राजा नल भी दमयंती को लेकर अपने राज्य में आगये और सुखपूर्वक राज्य करने लगे। कुछ काल बीतने पर उनके घर में इन्द्रसेन नामक एक पुत्र और इन्द्रसेना नामक एक पुत्री उत्पन्न हुई।

: ४ :

दमयंती का नल से विवाह हो जाने से देवता और दिक्पाल आदि तो प्रसन्न थे, पर कलि को यह अच्छा न लगा। वह दिक्पालों के पास गया और उनसे उसने इधर-उधर की बातें करके कहा कि आप लोगों ने नल के विवाह को कैसे पसंद कर लिया? दमयंती उस मानव के योग्य नहीं थी। उसे तो आपमें से किसी के अन्तःपुर में होना चाहिए था। पर दिक्पालों ने कलि को समझाया कि अब जो हो चुका सो हो चुका। फिर नल कोई साधारण मनुष्य नहीं है। वह बड़ा वीर और गुणी पुरुष है। उसका विरोध उचित नहीं है। इसके अतिरिक्त हम नल और दमयंती को आशीर्वाद दे चुके

हैं। लेकिन कलि को इससे संतोष नहीं हुआ। वह नल से बदला लेने के मौके की तलाश में रहने लगा।

एक रोज़ अवसर पाकर कलि ने नल के भाई पुष्कर को इस बात के लिए राजी कर लिया कि वह नल को चौसर के खेल के लिए निमंत्रित करे। उसने पुष्कर को यह भी विश्वास दिलाया कि खेल में वह चुपके से उसकी मदद करेगा और इस प्रकार नल का सारा राज्य उसका हो जायगा। और फिर अवसर पाकर वह राजा नल के शरीर में प्रवेश कर गया। कलि के शरीर में प्रविष्ट होते ही नल की विवेक-बुद्धि नष्ट होगई। तभी पुष्कर ने नल को पासा खेलने के लिए बुला भेजा। उन दिनों यह रिवाज था कि बुलावा देने पर चौसर के खेल और युद्ध के लिए क्षत्रिय लोग पीछे नहीं हटते थे। इसलिए निमन्त्रण मिलने पर, परिणाम को जानते हुए भी, बुद्धिमान नल कलि-प्रेरित बुद्धि से जुए के खेल के लिए राजी हो गये।

खेल आरम्भ हुआ। पर कलि के प्रभाव से नल का पासा कभी सीधा नहीं पड़ता था। इस प्रकार जितने दांव नल खेले, सब में वह हारते ही गये और पुष्कर की जीत होती गई। जैसे-जैसे नल हारते गए, वे और भी जोश में आकर खेलते गये और हारते गये।

दमयंती ने जब यह हाल देखा तो अनुमान कर

लिया कि अब सुख के दिन नष्ट होने को हैं। इसलिए उसने नल के विश्वासपात्र सारथी के साथ अपने दोनों बच्चों को अपने पिता के पास भेज दिया। सारथी उन्हें विदर्भ पहुँचा आया और खुद अयोध्या के राजा ऋतुपर्ण के यहाँ नौकर हो गया।

इधर चौसर के खेल में राजा नल अपना सबकुछ हार चुके थे। दांव पर लगाने को उनके पास कुछ नहीं बचा था। तब पुष्कर ने कहा, "आपकी पत्नी दमयंती अभी बाकी रही है। उसे क्यों नहीं दांव पर लगाते?" राजा नल की आंखें अब जाकर खुलीं। उन्होंने पासे के खेल को भी धर्म मानकर खेला था, पर अपने भाई की यह नीचता देख कर वे तिलमिला उठे। लेकिन करते क्या? ज़हर का घूंट पीकर रह गये और दमयंती को लेकर बनवास को निकल गये।

उधर राज्य पाकर पुष्कर का दिमाग फिर गया। उसने राज्य भर में मुनादी करवा दी कि जो कोई नल और दमयंती को आश्रय देगा वह राजा के कोप का पात्र होगा। राजा की इस आज्ञा के डर से कोई भी नल को आश्रय देने का साहस नहीं कर सका।

: ५ :

नल और दमयंती दारुण दुःख सहते जंगलों में भटकने लगे। धीरे-धीरे भूख, प्यास, थकान और चिंता

से वे बड़े दुःखी और परेशान हो उठे। एक दिन उन्हें सुन्दर पंख वाले पक्षी दिखाई दिये। उनको पकड़ने को नल ने अपनी धोती फैलाई, लेकिन पक्षी पकड़ में आने के बजाय धोती लेकर आकाश में उड़ गये। चकित-विस्मित नल नंगे खड़े रह गये। दमयंती ने जब यह दृश्य देखा तो वह और भी दुःखी हुई। आखिर लाज ढकने के लिए अपनी आधी साड़ी फाड़कर उसने नल को दी। इस प्रकार के कष्ट आदमी कब तक सह सकता है? नल भी बेबस हो उठे और उनका रहा-सहा धीरज भी जाता रहा।

एक रोज़ नल बड़े दुःखी होकर दमयंती से बोले, "प्रिये, मुझे अपने कष्टों की परवाह नहीं है, लेकिन मेरे कारण तुम जो यह कष्ट भोग रही हो इसका मुझे बड़ा दुःख है। इस कारण मेरी यह राय है कि तुम अपने माता-पिता के पास चली जाओ। मुझे भी एक चिन्ता से छुट्टी मिलेगी। मैं फिर अकेला अपना कुछ-न-कुछ प्रबन्ध कर ही लूंगा।"

यह सुन दमयंती बड़ी दुखी हुई। बोली, "नाथ, आप मुझे यह किस अपराध का दंड दे रहे हैं? यह कैसे संभव है कि मैं तो माता-पिता के यहाँ रह कर सुख भोगूं और आप जंगलों में भटकें? नहीं, मैं आपका साथ नहीं छोड़ूंगी।"

नल ने देखा कि दमयंती इस प्रकार राजी न होगी, लेकिन अगर उसे वन में अकेली छोड़ दिया जाय तो किसी-न-किसी प्रकार वह अपने पिता के पास पहुँच ही जावेगी। इस विचार से प्रेरित होकर वे दमयंती को छोड़ने का विचार करने लगे।

एक रात को जब दमयंती रास्ते की थकान से थक कर गहरी नींद में सो रही थी तब नल उठे और उसे वहीं सोती छोड़कर चल दिये। वे चल तो दिये, पर पत्नी का स्नेह उन्हें आगे बढ़ने नहीं देता था। चलने को तैयार होते और लौट पड़ते, पर अन्त में जी कड़ा करके वह सोती हुई दमयंती को भाग्य के भरोसे छोड़ कर आगे बढ़ गये।

जब दमयंती की नींद टूटी और उसने नल को अपने पास न पाया तो उसे परिस्थिति समझते देर न लगी। वह दारुण विलाप करने लगी। उसके करुण क्रन्दन से सारा वन गूंज उठा। इतने में एक शिकारी उधर आ निकला। उसने देखा कि एक परम सुन्दरी स्त्री व्याकुल होकर रो रही है और एक अजगर मुंह बाये उसे लीलने को आ रहा है। व्याध ने अपने वाणों से अजगर का काम तमाम कर दिया। इस सहायक को पाकर दमयंती को थोड़ा ढाढ़स हुआ, लेकिन अभी उसने आंसू भी नहीं पोंछे थे कि उससे भी बड़ी एक और

विपत्ति का उसे सामना करना पड़ा। वह व्याध दमयंती के रूप पर मुग्ध होकर उसका सतीत्व नष्ट करने पर उतारू हो गया। तब दमयंती ने देवों और दिक्पालों को स्मरण करके, क्रोध भरे नेत्रों से व्याध की ओर देखा। उसके देखते ही वह व्याध वहीं जल कर भस्म हो गया।

दमयंती फिर रोती-कलपती जंगलों में भटकने लगी। कभी रास्ते में शेर से भेंट हो जाती, कभी जंगली हाथियों के झुंड से। सब विपत्तियों से बचती-बचाती आखिर वह चेदि-नरेश सुबाहु के नगर में जा पहुँची। वहां दैवयोग से राजमाता की निगाह दमयंती पर पड़ी। इस प्रकार एक रूपवान और तेजस्वी स्त्री को दीन-हीन अवस्था में देखकर उन्होंने दमयंती को अपने पास बुला भेजा। यद्यपि दमयंती ने अपना असली परिचय नहीं दिया, लेकिन राजमाता ने अनुमान लगा लिया कि यह किसी भले और ऊंचे घराने की स्त्री है। भाग्य की विडंबना से ही यह इस हीन स्थिति को प्राप्त हुई है। इसलिए उनके मन में दमयंती के लिए दया उपजी और उन्होंने उसे अपनी पुत्री सुनंदा की सेवा के लिए रख लिया। सुनंदा बड़ी भली लड़की थी और वह दमयंती के साथ बड़ा अच्छा बर्ताव करती थी।

: ६ :

उधर नल दमयंती के वियोग में भटक रहे थे। कभी अपनी दुर्बुद्धि पर पछताते और कभी विधि की विडम्बना पर आंसू बहाते। जब कभी दमयंती की याद आती तो उनके दुःख का पार न रहता। इसी प्रकार जंगलों में भटकते-भटकते उनको एक आवाज़ सुनाई दी। आगे बढ़कर उन्होंने देखा कि एक भीषण नाग भयंकर दावानल में भस्म हुआ जा रहा है। नल को देखकर नाग मनुष्य की वाणी में बोला, "राजन्, आप मेरा उद्धार करें। इससे आपका और मेरा दोनों का ही भला होगा।"

नल ने उसकी प्रार्थना स्वीकार करके उसे बचा लिया और आगे चलने लगे। नाग बोला, "इस प्रकार नहीं, आप गिनती बोलते हुए चलें।" राजा नल एक, दो, तीन, इस प्रकार बोलते हुए आगे बढ़ने लगे। लेकिन दस की गिनती खतम करते ही नाग ने राजा नल को काट खाया। नल को बड़ी पीड़ा हुई और वे आश्चर्य और दुःख से नाग की ओर देखने लगे।

नाग बोला, "राजन्, दुःखी मत होओ, मैं कर्कोटक नाम का नागराज हूं। देवर्षि नारद के श्राप से अचल होकर वन में पड़ा था। आपके स्पर्श से मेरा श्राप छूट गया है। आपके शरीर में कलि रहने लगा था। इसी

से आप कष्ट उठा रहे हैं। मेरे काटने से उसको पीड़ा होगी और आपका रूप भी ज़रा बदल जायगा। इससे आपको कोई पहचान न सकेगा। यह अच्छा ही है। मैं आपको दो वस्त्र देता हूँ। आप जब इन्हें पहनेंगे तब अपने पूर्वरूप में हो जायँगे। अभी आपको कुछ दिन अज्ञात अवस्था में रहना होगा। आप मेरी सलाह मान-कर अयोध्या के राजा ऋतुपर्ण के यहां जाइये और उनके सारथी बनकर रहिये। चौसर की विद्या उनसे सीखिये। समय आने पर आपकी अपनी पत्नी, पुत्र और पुत्री सबसे भेंट होगी और गया हुआ राज्य भी वापस मिल जायगा।" यह कहकर नागराज अन्तर्धान होगये और राजा नल अयोध्या पहुँचे। वहां वे अश्वशाला के अध्यक्ष के पद पर काम करने लगे। वहीं उनकी अपने पुराने सारथी वार्ष्णेय से भी भेंट हो गई।

नल को जीविका तो मिल गई, लेकिन दमयंती के बिना उन्हें चैन नहीं था। उसकी याद उनको बुरी तरह सताती थी।

उधर विदर्भ-नरेश को जब नल और दमयंती पर आई हुई इस विपत्ति का हाल मिला तो वे बड़े दुःखी हुए। उन्होंने गुप्तचरों को चारों ओर नियुक्त कर दिया और आदेश दिया कि किसी भी प्रकार नल और दमयंती का पता लगा कर लावें।

कुछ समय बाद सुदेव नाम का एक ब्राह्मण गुप्तचर चेदि देश आया। वहां अचानक राज-प्रासाद में दमयंती को देखकर वह पहचान गया। उसने एकांत में दमयंती को अपना परिचय दिया और इन्द्रसेन और इन्द्रसेना का हाल बताने लगा। पिछली बातें फिर एकदम ताजा हो जाने के कारण दमयंती विलाप करने लगी। उसे रोता देखकर राजमाता का ध्यान उधर गया। उनके कारण पूछने पर उसने सब सही हाल बता दिया। राजमाता को यह सुन हर्ष-मिश्रित दुःख हुआ। वह कहने लगी, "तुम तो मेरी बहन की पुत्री हो। तुम्हारे नाना का नाम सुदामा है और वे दशार्ण देश के राजा हैं।" दमयंती के इस प्रकार प्रकट हो जाने पर महाराजा सुबाहु बड़े प्रसन्न हुए और उन्होंने बड़े आदर और सम्मान के साथ दमयंती को विदर्भ भेज दिया और राजा नल की खोज करने के लिए अपनी ओर से भी अनेक दूत तैनात कर दिये।

दमयंती सही-सलामत विदर्भ देश पहुँच गई। महाराजा भीम ने जब दमयंती को देखा तो बड़े दुःखी हुए। उन्होंने गुप्तचरों का जाल और भी घना कर दिया। नल की जोरों से खोज होने लगी।

कुछ दिनों बाद एक गुप्तचर अयोध्या से समाचार लाया कि राजा नल का तो पता नहीं चला, लेकिन

ऋतुपर्ण नरेश के यहां एक ऐसा सारथी है जो दमयंती की दयनीय दशा का वर्णन सुनकर बड़ा दुःखी हुआ। उसका नाम बाहुक है। यह सुन दमयंती के दिल में एक आशा जाग उठी। उसे विश्वास हो गया कि अब कुछ शुभ होने वाला है। उसने शीघ्र ही सुदेव नामक गुप्तचर को, जिसने स्वयं दमयंती का पता लगाया था, बुला भेजा। उससे कहा कि वह राजा ऋतुपर्ण के पास अयोध्या जाय और उनसे कहे कि दमयंती ने अपना दूसरा स्वयंवर करने का निश्चय किया है। सुदेव ने ऐसा ही किया।

: ७ :

ऋतुपर्ण ने जब दमयंती के स्वयंवर का हाल सुना तो बड़ा प्रसन्न हुआ। वह दमयंती को प्राप्त करना चाहता था, लेकिन जब उसे मालूम हुआ कि स्वयंवर की तिथि तो कल ही है, तो वह बड़ा निराश हुआ। उसने अपने नये सारथी बाहुक को बुलाकर सब हाल बताया। बाहुक बोला "आप चिन्ता क्यों करते हैं? मैं निश्चित घड़ी से पहले ही आपको विदर्भ पहुंचा दूंगा।" लेकिन जब उसने स्वयंवर का हाल सुना तो उसे बड़ी व्यथा हुई। पर तभी दमयंती के प्रति अपने बर्ताव की, उसे जंगल में अकेली छोड़ जाने की, बात उसे याद आगई। बस उसने अपने मन को समझा लिया कि

ऐसी हालत में बेचारी दमयंती और कर भी क्या सकती है ? और फिर अब अधिक विचार करने से होता भी क्या ?

बाहुक ने वायु के वेग को मात करने वाले घोड़े रथ में जोड़े और राजा ऋतुपर्ण को लेकर तेज़ी से विदर्भ देश की ओर चल पड़ा। रथ की गति और हांकने की कुशलता को देखकर राजा और उसके अपने पुराने सारथी वार्ष्णेय को बड़ा कुतूहल हुआ। इसी बीच ऋतुपर्ण का दुपट्टा नीचे गिर गया। उन्होंने उसे उठाने के लिए सारथी को रथ रोकने की आज्ञा दी। बाहुक ने उत्तर दिया, "महाराज, इतने समय में रथ चार कोस आगे आगया है।" राजा ऋतुपर्ण बड़े आश्चर्य में पड़ गये और उन्होंने दुपट्टे की आशा छोड़ दी।

ऋतुपर्ण गणन-कला में बड़े निपुण थे। उन्होंने बाहुक से कहा, "देखो, सामने जो बेहड़े का पेड़ है बताओ, उसमें कितने पत्ते हैं? पहले मैं बताता हूं। फिर तुम गिनकर उसकी पुष्टि कर लेना। पेड़ में पांच करोड़ पत्ते हैं, और हर शाखा में २ हज़ार ९५। जमीन पर सौ पत्ते और सौ फल पड़े हैं।

बाहुक ने रथ रोका और गिनती की तो वे पूरे निकले। तब तो उसे बड़ा आश्चर्य हुआ और वह राजा ऋतुपर्ण से बोला, "आप कृपा करके मुझे यह कला

सिखा दीजिए।" राजा ने कहा, "तुम मुझे अश्व-संचालन-कला सिखा दो तो मैं भी तुम्हें अपनी कला सिखा दूंगा।" बात पक्की रही और दोनों ने एक-दूसरे को अपनी-अपनी कला सिखा दी। ऋतुपर्ण को विदर्भ पहुंचने की जल्दी थी, इसलिए उसने अपनी विद्या बाहुक को बहुत जल्दी सिखा दी। बाहुक ने कहा, "आप तो द्यूत-विद्या भी जानते हैं। मुझे वह कला भी सिखा दें।" राजा बाहुक से बड़े खुश थे इसलिए उन्होंने उसे द्यूत-विद्या भी सिखा दी। द्यूत-विद्या के सीखते ही कलि राजा नल के शरीर में से निकल कर भाग गया। उसका प्रभाव हटते ही नल को अपनी बुराइयों का भान होने लगा और वे अपने पिछले कामों पर पछताने लगे।

शाम होते-होते बाहुक ऋतुपर्ण को लेकर विदर्भ देश जा पहुंचे। ऋतुपर्ण के सहसा आ जाने से महाराज भीम को बड़ा आश्चर्य हुआ, लेकिन दमयंती के बायें अंग फड़कने लगे। उसका मन शांत होने लगा।

महाराज भीम ने ऋतुपर्ण की बड़ी आवभगत की और उन्हें राज्य की बड़ी अतिथिशाला में ठहराया गया। बाहुक से भी महाराज भीम की बातें हुईं और उनको भी बाहुक के राजा नल होने का संदेह हुआ। उन्होंने जाकर दमयंती से सारा हाल कहा। तब दमयंती

ने एक और काम किया। बाहुक के लिए उसने बना-बनाया भोजन नहीं भेजा, बल्कि खाली पात्र और भोजन-सामग्री भेजी। आग पानी का कोई प्रबन्ध नहीं किया गया, लेकिन नल के प्रभाव से अग्नि स्वयं प्रकट हो गई। वरुण ने जल का प्रबन्ध कर दिया। इस तरह भोजनादि से छुट्टी पाकर बाहुक विश्राम करने लगे। इतने में दमयंती की दासी इन्द्रसेन और इन्द्रसेना को लेकर बाहुक के पास पहुंची। बाहुक अपनी दोनों संतानों को देखकर दुःख से कातर हो उठे, लेकिन फिर संभल कर बोले, "मेरे भी ऐसे ही दो संतानें हैं। बहुत दिनों से उन्हें नहीं देखा। इस कारण उनकी याद आने से मन दुःखी हो गया है। इन्हें ले जाओ। ये तो नल के पुत्र हैं, पर कल न जाने किसके हो जायंगे।" बाहुक ने अपने बनाये भोजन में से भी बालकों को कुछ दिया और प्यार करके उन्हें विदा किया।

दमयंती को दासी ने सब हाल सुनाया। बच्चों के हाथ से बाहुक का बनाया भोजन चख कर उसे पूर्ण निश्चय हो गया कि बाहुक और कोई नहीं, महाराज नल ही हैं। तब उसने अपनी माता से सारा हाल कहा और बाहुक को अपने भवन में बुला भेजा। वहां बाहुक अपने को न छिपा सके। उन्होंने अपना असली परिचय प्रकट कर दिया। उन्होंने बताया कि कलि के प्रभाव से

उनकी बुद्धि नष्ट हो गई थी। इसी कारण यह सारा संकट आया और अनर्थ हुआ। उन्होंने यह भी बताया कि अब कलि का प्रभाव जाता रहा है और संकट के दिन पूरे होगये हैं। पर दमयंती तो दूसरे स्वयंवर की तैयारी कर रही है। यह दूसरा संकट उपस्थित होने का लक्षण कैसा ?"

दमयंती ने कांपते हुए नल के चरण छुए और बोली, "हे नाथ, यह सब आपको खोजने और प्राप्त करने का षड्यंत्र था। मैं दूसरा स्वयंवर कर कैसे सकती हूं ? क्या आप भूल गये दिक्पालों की प्रार्थना ठुकरा कर मैंने आपको भरी सभा में वरण किया था ? मैं अपना धर्म कैसे छोड़ सकती थी ? आप अपने मन से यह बात निकाल दीजिए।"

अब तो यह बात राजधानी में चारों ओर बिजली की तरह फैल गई। बाहुक ने कर्कोटक के दिये हुए वस्त्र पहन कर अपना असली रूप प्राप्त कर लिया। चारों ओर आनन्द और हर्ष की लहर दौड़ गई। राजा ऋतुपर्ण ने महाराज नल से क्षमा मांगते हुए कहा, "मेरी अधीनता में रहते हुए आपको कोई कष्ट हुआ या मेरी ओर से कोई अविनय हुआ हो तो क्षमा कीजियेगा।"

राजा नल ने कहा, "ऐसे संकट के समय आपने

Mahatma Gandhi Memorial Library

5, Kumara Park (East), Bangalore-1

BOOK CARD

152W3N55

CL No. 015,1KAL Acc. No. H:000505

Author KALIDASA ( ) ( ).

Title Nalodaya

Ticket No.	Issue Date	Return Date	Ticket No.	Issue Date	Return Date

'संस्कृत साहित्य-सौरभ' की पुस्तकें

१. कादम्बरी
२. उत्तररामचरित
३. वेणी-संहार
४. शकुन्तला
५. मृच्छकटिक
६. मुद्राराक्षस
७. नलोदय
८. रघुवंश
९. नागानन्द
१०. मालविकाग्निमित्र
११. स्वप्नवासवदत्ता
१२. हर्ष-चरित
१३. किरातार्जुनीय
१४. दशकुमार चरित : भाग १
१५. दशकुमार चरित : भाग २
१६. मेघदूत
१७. विक्रमोर्वशी
१८. मालतीमाधव
१९. शिशुपाल वध
२०. बुद्ध चरित
२१. कुमारसंभव
२२. पंचरात्र

मूल्य प्रत्येक का छः आना

७

सस्ता साहित्य मण्डल

छः आना